संगोष्ठी एवं फिल्म महोत्सव के बारे में :-

मनुष्य में सृष्टि और जीवन को जानने की प्रबल स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है, इसी के फलस्वरूप दर्शन का आरम्भ हुआ। नैसर्गिक आवश्यकताओं की सीमित पूर्ति एवं प्रकृति की विभीषिकाओं से आत्यंतिक संघर्ष के उपरान्त मानव की दृष्टि इस सृष्टि या प्राकृतिक वैभव पर केन्द्रित होने लगी, जिसने मानव हृदय को अहलाद से संचारित कर दिया। साथ ही मस्तिष्क में सृष्टि को जानने का कौतूहल भी उत्पन्न हुआ। इन्हीं जिज्ञासाओं के समाधान के लिए एक विशेष प्रकार का तार्किक चिन्तन आरम्भ हुआ जिसे हम दर्शन के रूप में समझते हैं। इस आधार पर प्रत्येक देश और समाज में वहाँ के अनुकूल अपने ढंग से दर्शन की उत्पत्ति हुई जिसकी अभिव्यक्ति विभिन्न माध्यमों से होती रही है और आज सिनेमा भी इस दर्शन की खोज का सबल माध्यम बन गया है।

सिनेमा मानव की तमाम सांस्कृतिक उपलब्धियों में से एक महत्वपूर्ण कला रूप है, जिसमें पिछले 125 सालों में दुनिया को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक समन्वित कला होने के नाते यह संगीत नृत्य चित्रकला, अभिनय, साहित्य सभी को समेटे हुए है। इनके ज़रिये सिनेमा हमारे ज़िन्दगी के सवालों को पर्दे पर फिल्माता है। इसमें मानव समाज के सुख-दुख, उनके सपने, उनकी इच्छायें, उनके संघर्ष, उनकी बदलती छवियाँ समाहित हैं। सिनेमा में जीवन के दार्शनिक एवं मूल्यगत सवाल भी पर्दे पर चलते फिरते कथानकों के ज़रिये आते हैं। इस सेमिनार एवं फिल्मोत्सव में हम हिन्दी सिनेमा के माध्यम से हमारे समाज में देश काल सापेक्ष विभिन्न मूल्यों में आये बदलावों पर एक चर्चा करना चाहते हैं। जैसे सत्यनिष्ठा, प्रेम, हिंसा, ईर्ष्या, सामाजिक भाई चारा जैसी मानवीय प्रवृत्तियाँ सिने पर्दे पर अपना रूप बदलती रही हैं। बाजार के दबाव में, उपभोक्तावाद ने जीवन के हर हिस्से को प्रभावित किया है। इस दौर में बने सिनेमा ने भी मानव की अभिवृत्तियों, उनके मूल्यों, उनके सोचने-समझने और दुनिया जहान को देखने की दिशा निर्धारित की है। इस सेमिनार में हम ''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप'' के आलोक में निम्नलिखित शीर्षकों पर पत्र आमंत्रित करते हैं फिल्म महोत्सव में इन्हीं शीर्षकों से सम्बन्धित फिल्मों का प्रदर्शन भी किया जायेगा।

- हिन्दी सिनेमा और सत्यनिष्ठा
- हिन्दी सिनेमा और उपभोक्ता वाद
- हिन्दी सिनेमा और सामाजिक भाई चारा
- हिन्दी सिनेमा और प्रेम के बदलते आयाम
- हिन्दी सिनेमा और अहिंसा का स्वरूप
- हिन्दी सिनेमा और न्याय का सवाल
- हिन्दी सिनेमा मानव अस्तित्व की समस्यायें
- हिन्दी सिनेमा और पर्यावरण
- हिन्दी सिनेमा और नारी अस्मिता
- हिन्दी सिनेमा और जीवन दर्शन

पंजीकरण शुल्क: 500/–

पत्राचार ई.मेल:
philosophyatul@gmail.com
ऑन लाइन: *www.uprtou.ac.in*

Contact
Dr. Atul Kumar Mishra
(Philosophy)
Director Regional Centre, Allahabad
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

7525048059, 9415141207,
E-mail: atul_mishra07@rediffmail.com

विश्वविद्यालय: एक दृष्टि में–

इस विश्वविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, अधिनियम 1999 उत्तर प्रदेश (अधिनियम संख्या–10, 1999) के अन्तर्गत हुई। इस विश्वविद्यालय को दूरस्थ शिक्षा योजना के अन्तर्गत एक मुक्त विश्वविद्यालय, बनाया गया, जिससे पूरे उत्तर प्रदेश में सुनियोजित ढंग से उच्च शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से संचालित हो सके। आबादी के एक बड़े क्षेत्र में काम कर रहे लोगों, गृहणियों और अन्य वयस्कों को उच्च शिक्षा से जोड़ने तथा उनके उन्नत भविष्य के लिए ज्ञानार्जन हेतु विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। अपने स्थापनाकाल से ही विश्वविद्यालय दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के रूप में आबादी के बड़े क्षेत्रों और विशेष रूप से, वंचित समूहों में, के लिए उच्च शिक्षा के लिए पहुँच प्रदान करने की योजना काम पर काम कर रहा है। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश सरकार का एक मात्र मुक्त विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय का नामकरण हिन्दी के प्रबल समर्थक, प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के नाम पर किया गया। यह विश्वविद्यालय गृहणियों, विकलांगों, दलितों, आर्थिक रूप से विपन्न वर्ग, सेवारत व्यक्तियों तथा सुदूर ग्रामीण अंचलों के निवासियों तक उच्च शिक्षा को पहुँचाने के लिए दृढ़ संकल्प है। अल्पतम समय में ही इस विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवीन कीर्तिमान स्थापित किए हैं इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश है। यह विश्वविद्यालय अध्ययन केन्द्रों तथा क्षेत्रीय केन्द्रों के माध्यम से उच्च शिक्षा के प्रकाश को जन–जन तक पहुँचा रहा है।

इलाहाबाद के बारे में:

इलाहाबाद विश्व का एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक एवं धार्मिक नगर है, जिसे प्रयागराज या तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है। यह प्राचीन काल से ही ज्ञान का केन्द्र रहा है, यहाँ गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती का संगम है। यहाँ प्रत्येक 12 वर्ष बाद विश्व के सबसे बड़े मेले कुंभ का आयोजन होता है। स्वतंत्रता संग्राम में प्रभावी भूमिका निभाने वाला शहर इलाहाबाद भारत के साहित्य एवं राजनीति का भी केन्द्र रहा है, जिसने देश को अनेक साहित्यकार एवं राजनेता दिए हैं। अपनी बनावट एवं अद्भुत वातावरण के कारण इसकी गणना देश के महत्वपूर्ण शहरों में होती है। साहित्यकार धर्मवीर भारती के शब्दों में 'इस शहर की बनावट, गठन, जिन्दगी और रहन–सहन में कोई बँधे–बँधाये नियम नहीं, कहीं कोई कसाव नहीं, हर जगह एक स्वच्छंद खुलाव, एक बिखरी हुई सी अनियमितता। मौसम में कोई सम नहीं, कोई संतुलन नहीं। सुबह मलय की, दोपहर अंगारे तो शामें रेशमी...... सचमुच लगता है कि प्रयाग का नगर–देवता स्वर्ग–कुंजों से निर्वासित कोई मनमौजी कलाकार है, जिसके सृजन में हर रंग के डोरे हैं।''

पंजीकरण फार्म

नामः______________________________

____

पदनामः____________________________

____

विश्वविद्यालय / संस्थान / कालेजः______________

____

____

____

पूर्ण पत्र व्यवहार पताः

____

____

ई-मेलः____________________________

फोन / मोबाइल नं0ः

____

शोध पत्र शीर्षक

____

____

____

लेखकः____________________________

उप–लेखकः

____

____

पंजीकरण शुल्क विवरणः

शुल्कः________________

दिनांकः____/____/20

डी.डी. / कैश/ ऑन लाइन

(a) डिमाण्ड ड्राफ्ट नं0.:

(b) रसीद क्रमांक.:

(c) ऑन लाइन शुल्क चालान नं0.:

प्रतिभागी हस्ताक्षर

डिमाण्ड ड्राफ्ट : वित्त अधिकारी, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के पक्ष में देय होगा

सलाहकार समिति

डॉ. ओम जी गुप्ता
डॉ. पी.पी. दुबे
डॉ. आशुतोष गुप्ता
प्रो. (डा.) जी.एस. शुक्ला
प्रो. पी.के. पाण्डेय
प्रो. सुधान्शु त्रिपाठी
डॉ. टी.एन. दुबे
डॉ. इति तिवारी
श्री एस.पी. सिंह
डॉ. रामजी मिश्रा

आयोजन समिति

डॉ. संतोषा कुमार, डॉ. विनोद कुमार गुप्त
डॉ. रुचि बाजपेयी, डॉ. श्रुति, डॉ. मीरा पाल
डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव, डॉ. देवेश रंजन त्रिपाठी
डॉ. राम जनम मौर्या, डॉ. दिनेश सिंह
डॉ. जी.के द्विवेदी, डॉ. मुकेश कुमार
सुश्री मारिया, श्री मनोज बलवन्त
डॉ. सुनील कुमार, डॉ. उपेन्द्र तिवारी
डॉ. शैलेश कुमार यादव, डॉ. दीपशिखा
डॉ. अल्का वर्मा, डॉ. स्मिता अग्रवाल
श्री रमेश कुमार, डॉ. अब्दुल रहीम
डॉ. गौरव संकल्प, डॉ. दिनेश गुप्ता, डॉ. नीता मिश्र
डॉ. प्रभात मिश्रा, श्री इन्दु भूषण पाण्डेय
श्री नीरज मिश्रा, शिवम मिश्रा
श्री धीरज नायर, श्री शाहबाज अहमद

महत्वपूर्ण तिथि

पूर्ण शोध पत्र भेजने की तिथि : 15 मार्च 2018

नोट
हिन्दी फाण्ट Kruti dev 10 में
एवं अंग्रेजी फाण्ट Times New Roman में भेजें।

यात्रा भत्ता / भोजन एवं ठहरने के लिए –
प्रतिभागियों अपने यात्रा / रहने का खर्च स्वयं वाहन करेंगे। राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा केवल जलपान, मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था उपलब्ध होगी। आमंत्रित सदस्य / विशेषज्ञों को अन्य सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

IN QUEST OF PHILOSOPHY THROUGH CINEMA

CHANGING PATTERNS OF VALUES IN HINDI CINEMA
''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप''

National Seminar & Film Festival
on 27 & 28 March 2018

संरक्षक
प्रो. एम.पी. दुबे
कुलपति
उ.प्र.राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

संगोष्ठी निदेशक
डॉ. आर.पी.एस. यादव
निदेशक मानविकी विद्याशाखा

संयोजक
डॉ. साधना श्रीवास्तव
पत्रकारिता

सह–संयोजक
डॉ. सतीश चन्द्र जैसल
पत्रकारिता

आयोजन सचिव
डॉ. अतुल कुमार मिश्र
दर्शनशास्त्र

आयोजन स्थल
सरस्वती परिसर (शैक्षणिक भवन)
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
सेक्टर–एफ शान्तिपुरम, फाफामऊ, इलाहाबाद–211013
वेब साइट : www.uprtou.ac.in

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

IN QUEST FOR PHILOSOPHY THROUGH CINEMA

CHANGING PATTERNS OF VALUES IN HINDI CINEMA

''हिन्दी सिनेमा में मूल्यों के बदलते प्रतिरूप''

National Seminar & Film Festival

Contact : **Dr. Atul Kumar Mishra** (Philosophy)
Director Regional Centre, Allahabad, U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad
7525048059, 9415141207, E-mail: atul_mishra07@rediffmail.com, web : www.uprtou.ac.in